कुँवर सिंह महाविद्यालय, लहेरियासराय, दरभंगा

(ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वरनगर, दरभंगा की एक अंगीभूत इकाई)

विभागीय संगोष्ठी

(इतिहास विभाग)

Date:-24.10.2017

संगोष्ठी से संबंधित प्रतिवेदन

आज दिनांक 24.10.2017 को इतिहास विभाग द्वारा ''परम्परागत भारतीय शिक्षा एवं भू–मंडलीकरण का प्रभाव'' शीर्षक पर एक विभागीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस संगोष्ठी में इसी महाविद्यालय के इतिहास विभाग के पूर्व विभागाध्यक्ष डॉ0 मदन मोहन ठाकुर, संसाधन पुरूष के रूप में सम्मिलित हुए। इस संगोष्ठी की शुरूआत इतिहास विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ0 राकेश रंजन सिन्हा के स्वागत भाषण से हुआ। प्राचार्य डॉ0 अमरेन्द्र कुमार सिंह ने इस संगोष्ठी की अध्यक्षता की।

अपने मुख्य भाषण में संसाधन पुरूष डॉ0 मदन मोहन ठाकुर ने यह बताया कि जहाँ भारत की परम्परागत शिक्षा पद्धति में विधार्थियों के चरित्र निर्माण, अनुशासन, व्यक्तित्व विकास एवं समाज सेवा पर बल दिया जाता था, वही अब भू–मंडलीकरण के प्रभाव के कारण आधुनिक शिक्षा पद्धति में गुरू–शिष्य के संबंधों में दरार, अनुशासन एवं समाजिक एवं नैतिक मूल्यों में गिरावट आई है।

वस्तुतः भू–मंडलीकरण के परिप्रेक्ष्य में आज भारत के विज्ञान, तकनीकी एवं व्यवसायिक शिक्षा पद्धति में परम्परागत शिक्षा पद्धति का कोई महत्त्व नही रह

गया है, क्योंकि भारत की परम्परागत शिक्षा पद्धति मुख्यतः शिक्षा के उद्देश्यों पर जोर देती थी।

परन्तु इसका यह मतलब नही है कि भू–मंडलीकरण के इस दौर में भारत की परम्परागत शिक्षा पद्धति का कोई महत्त्व नही है। वास्तव में स्वार्थ रहित गुरू–शिष्य संबंध, अनुशासन, चरित्र निर्माण, व्यक्तित्व विकास मातृभाषा के प्रयोग पर जोर एवं समाजिक एवं नैतिक मूल्यों का विकास, कुछ ऐसे तत्व है जिसके कारण परम्परागत शिक्षा पद्धति का महत्त्व वर्तमान के साथ–साथ आने वाली पीढ़ी के लिए भी महत्त्वपूर्ण है।

परम्परागत शिक्षा पद्धति की एक महत्त्वपूर्ण विशेषता आश्रम व्यवस्था थी जिसमें विद्यार्थी अपने गुरूओं से वही शिक्षा एवं संरक्षण प्राप्त करते थे, जो घर पर वे अपने माता–पिता से प्राप्त करते थे। आज के इस भू–मंडलीकरण के दौर में हम विद्यालयों एवं महाविद्यालयों की बाढ़ पाते है जिसका एक मात्र उद्देश्य किसी भी तरह विद्यार्थियों से पैसा कमाना है। वास्तव में आज शिक्षकों का भी उद्देश्य विद्यार्थियों का चरित्र निर्माण नही हो कर, मात्र पैसा कमाना रह गया है। भू–मंडलीकरण के दौर में आज हम अपनी मातृभाषा से दूर होकर अंग्रेजी भाषा के गुलाम हो गए है और अपनी प्रतिभा कुंठित कर रहे है। आज के भू–मडलीकरण के दौर में पराम्परागत शिक्षा पद्धति के विपरित अधुनिक शिक्षा का मुख्य उद्देश्य शिक्षा अर्जित न कर, पैसा अर्जित करना हो गया है, ताकि विद्यार्थी अपने साथ–साथ अपने परिवार का भी भरण–पोषण कर सकें। बिना चारित्रिक निर्माण के, आज की शिक्षा पद्धति विद्यार्थियों को पैसा अर्जित करने वाली मशीन बना कर रख दी है। भू–मंडलीकरण के दौर में आज के विद्यार्थियों में आत्म विश्वास एवं धैर्य की कमी हो गई है एवं उनमें विलासिता संबंधी वस्तुओं की ओर उनका झुकाव अधिक हो गया है। आज विद्यालयों एवं महाविद्यालयों में अनुशासन माखौल बन कर रहा गया है, क्योंकि दण्ड की व्यवस्था विद्यार्थियों की

आर्थिक एवं सामाजिक हैसियत पर निर्भर करती है। परम्परागत शिक्षा पद्धति में वैलेन्टाईन दिवस की जगह आश्रम में गुरू एवं गुरू माता की पूजा की परम्परा थी।

यद्यपि यह सही है कि विज्ञान, तकनीकी एवं व्यवसायिक शिक्षा के क्षेत्र में परम्परागत भारतीय शिक्षा पद्धति का कोई महत्त्व नही रह गया है परन्तु चारित्रिक निर्माण की प्राप्ति, स्वार्थ रहित गुरू–शिष्य परम्परा, व्यक्तित्व विकास एवं समाजिक एवं नैतिक मूल्यों के विकास के कारण भारतीय परम्परागत शिक्षा पद्धति का महत्त्व वर्तमान के साथ–साथ भविष्य के लिए भी है।

इस संगोष्ठी में कुल 40 विद्यार्थियों ने अपनी उपस्थिति दर्ज की, वही कुछ विभागों के शिक्षकों ने भी इस संगोष्ठी के शीर्षक की प्रासंगिकता को देखते हुए, इस संगोष्ठी में शामिल हुए ।

अर्थशास्त्र विभाग के श्री विनीत कुमार के धन्यवाद ज्ञापन के साथ ही इस संगोष्ठी का समापन हो गया ।